RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-06
June-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

तारसप्तक के कवियों के नवगीतों का मूल्यांकन

उपासना

शोध–छात्रा, हिन्दी–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

तारसप्तक, दूसरा, तीसरा और चौथा सप्तक में सम्पादक ने कवियों के गीतों को स्थान दिया है । इन चारों सप्तकों में दस कवि ऐसे हैं जिन्होंने नये ढंग से गीत लिखे और उन गीतों को 'नवगीत' का प्रारंभिक रूप माना जा सकता है; उनमें गिरिजाकुमार माथुर, धर्मवीर भारती, रघुबीर सहाय, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, भवानी प्रसाद मिश्र और केदारनाथ सिंह विशेष हैं । गिरिजाकुमार माथुर मूलतः गीतकवि हैं । उन्होंने काव्य रचना का प्रारंभ 'मंजीर' नामक काव्य संकलन किया है । जब वे प्रयोगवादी मण्डल में शामिल हुए तो उन्होंने गीतों में भाषा और छन्द का प्रयोग किया है । इस तरह नाश और निर्माण धूप के धान, गीतों का रूप शिल्प पर्याप्त नहीं हो गया । 'शिलापंख चमकीले' में इन्होंने गीतों का निखार किया और संगीत तत्त्व की प्रधानता है । गिरिजाकुमार माथुर शब्दशिल्पी थे उन्होंने संगीत को पकड़ कर उसे छन्दों में बांधने का प्रयास किया । लोकगीत हों या रीतिकालीन मुक्तछंद के घनाक्षरी छन्द आदि की बहरें, इन्होंने सबको अपनाकर अपने ढंग से उपयोग किया है । 'धूप के धान' में ऋतु चित्र और 'शिलालेख चमकीले' में 'जुड़े के फूल' तथा 'बसन्त एक गीत स्थिति' रचनाएँ लोकधुनों से प्रभावित हैं –

"पिया आया बसन्त, फूल रस के भरे
फूल रस के भरे
गंध जुड़े कसे
चली पिंयरी बतास
छायी मन के दिगन्त"[1]

कवि ने लोकगीतों के आधार पर लोकजीवन स्थितियों और वातावरण का उल्लेख किया है । कवि ने प्रेम और सामाजिक चेतना का वर्णन किया है । 'छायामत छूना मन' अनकही बात', 'भूले हुयो का गीत' व्यक्ति की मन व्यथा, मनोवैज्ञानिक ढंग से उद्घाटन किया है । कवि ने नये–नये बिम्बों का भी प्रयोग किया है ।

धर्मवीर भारती दूसरे सप्तक के कवि हैं । उनमें छायावादी कल्पना शीलता और रोमानियत का वर्णन किया है । उनके काव्य संग्रह 'ठण्डा लोहा', और 'सात गीत वर्ष' में रोमानी प्रवृत्ति कम दिखाई देती हैं । 'ठण्डा लोहा' काव्य संग्रह में लोकगीतों का प्रभाव होने के कारण नवगीत की श्रेणी में आते हैं । 'फागुन की शाम', 'डोले का गीत', 'बेला महका' आदि गीतों में लोकचेतना के भाव मिलते हैं । धर्मवीर भारती अपने गीत प्रवृत्ति से आगे बढ़कर नये प्रतीक और आधुनिक भावबोध का वर्णन किया है । वस्तुतः सप्तकीय कवियों में नवगीत के विकास को सही दिशा देने वाले सबसे सशक्त कवि हैं । उनके 'सात गीत वर्ष' में कई ऐसे गीत हैं जो आधुनिक संघर्षरत व्यक्ति की मजबुरियों और टूटते हुए सामाजिक मूल्यों को नये प्रतीकों द्वारा अभिव्य×जना की गई है । 'संक्रांति' गीत की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं –

"सूनी सड़कों पर वे आवारा पेड़
माथे पर टूटे नक्षत्रों की छाँव
कब तक आखिर कब तक ?"[1]

भारती ने उर्दू बहरों का सफल प्रयोग किया है और मुक्त छन्द का प्रयोग किया है । कहीं–कहीं परम्परागत सममात्रिक समतुकान्त योजना भी दर्शनीय है । कवि ने लोककथा को प्रतीकों के माध्यम से उद्घटित किया है –

"कुछ समीप की, कुछ सुदूर की
कुछ चन्दन की, कुछ कपूर की
कुछ में गेरू कुछ में रेशम
कुछ में केवल जाल"[2]

दूसरे सप्तक के कवि नरेश मेहता ने दूसरे कवियों की अपेक्षा अधिक गीत लिखे हैं, ये गीत अलंकृत हैं, असादृश्यमूलक वैदिक उपमानों पर आधारित हैं । इनको नवगीत तो नहीं कहा जा सकता लेकिन बाद में गीतों की भाषा और बिम्ब विधान बदल गया । उनका 'वनपाखी सुनो' काव्य संग्रह में अनावश्यक प्रयोगों से काव्य को हानि पहुँचायी ।

दूसरे सप्तक के कवि रघुवीर सहाय ने 'सीढ़ियों पर धूप में' भाषा, भाव, छन्द की दृष्टि से आकर्षित है । कवि सामान्य बोलचाल की भाषा में दैनिक व्यवहार के कार्यों वस्तुओं का प्रयोग–संकेत एवं प्रतीक रूप में किया है जिससे कविता किसी दूर कल्पना की वस्तु मालूम नहीं होती । 'ओ रे साथी' शीर्षक गीत की पंक्तियाँ निम्नवत् हैं –

"ओ रे मन नहीं माने यदि मन नहीं माने
ओ रे मन नहीं माने, मन बिना जाने पहचाने
कोई गह के छिगुनिया, जिधर जाये दुनिया ।"[3]

कवि केदारनाथ सिंह ने आंचलिक प्रवृत्ति को अपनाया है । कवि केदारनाथ सिंह ने नयी कविता में उतरने से पूर्व ही इन गीतों की रचना की थी । उनके गीतों से आकृष्ट होकर अज्ञेय ने उन्हें 'तीसरा सप्तक' में सम्मिलित किया था । इनके गीतों में लोकजीवन की अनुभूतियों के साथ–साथ लोकधुनों की ताजगी और सादगी मिलती है । तीसरे सप्तक में उनके गीत हैं – 'दुपहरिया', 'फागुन का गीत, धानों का गीत और रात 'पात नये आ गये' ।

[1]गिरिजा कुमार माथुर : बसन्त एक गीत स्थिति

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना 'तीसरे सप्तक' के कवि में सूक्ष्म, गहरी सहज अभिव्यंजना इनके नवगीतों में दिखाई देती हैं । इन्होंने लेकगीतों से प्रभावित गीत, परम्परागत शैली के सममात्रिक, समतुकान्त, मुक्तक छन्द और समतुकान्त गीत लिखे हैं । समकालीन जीवन की बेबसी को बड़ी सफलता से कवि ने 'काठ की घंटिया' काव्य–संकलन में चित्रित किया है।

'अहं से मेर बड़ी हो तुम', 'चुप रहो', 'पंख दो' आदि गीतों में इसी प्रकार का चित्रण किया है । उनके बाद के काव्य संकलनों में भी गीतों को स्थान दिया गया है । कवि सक्सेना नवगीत विधा के प्रति समर्पित थे ।

तीसरे सप्तक के कवि कुँवरनारायण नयी कविता और नये गीत को समतुल्य मानते हैं किन्तु उन पर लोकगीतों और लोक जीवन का प्रभाव नहीं पड़ा । वे ग्रामजीवन और प्राकृतिक दृश्यों से अछूते रहे । उन्होंने व्यक्तिमन की गहराइयों का उद्घाटन किया है उन्होंने स्थूल अनुभव स्थितियों के साथ सूक्ष्म आध्यात्मिक अभिव्यक्तियों का वर्णन किया है । कवि ने बोलचाल की भाषा सरल और संक्षिप्त प्रयुक्त की है जो बखस मनुष्य को अपनी ओर आकृष्ट करती है । उनके काव्य संग्रह 'चक्रव्यूह' 'धब्बे और तस्वीर' 'सृजन का क्षण', धुंधले संकेत, 'अक्षर' और कुछ ऐसे भी यह दुनिया जानी जाती है । कवि कुंवरनारायण ने प्रतीकों के द्वारा आधुनिक भावबोध को ध्वनित किया है । दूसरे सप्तक में 'शहजादे की कहानी', 'गुड़िया और भूतहा घर' में लोककथाओं के साथ लोकविश्वासों, लोकप्रथाओं के प्रतीकों द्वारा आधुनिक जीवन के संघर्ष से उत्पन्न संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया है । 'चक्रव्यूह' नामक संग्रह में 'जन्मसिद्ध अधिकार' और चक्रव्यूह शीर्षक गीतों के प्रतीक पौराणिक हैं जिनके द्वारा वर्तमान युग के व्यक्ति की संवेदनाओं को चित्रित किया है ।

तीसरे सप्तक के कवि विजयदेव नारायण साही की कविताओं में नवीनता तो है पर रोमानी भाव तरंगों में लहराते ये गीत अभी आधुनिकता की दोहरी पर ही पहुँच सके हैं ।

कवि साही के 'मानवराग', 'संग संग के गान', 'माघ दस बजे' शीर्षक गीतों के जितने नये हैं उतने नये गीत वे नहीं हैं । कवयित्री कीर्ति चौधरी की कविताओं में प्रयोगों की अधिकता और रूप और वस्तु की साही की अपेक्षा नयी है, नवीनता लिए हुए हैं ।यह ठीक है उनके गीतों में कथ्य का अभाव और अनुभूति की अपरिपक्वता दिखाई देती है। इसी कारण 'फूल भर गये', 'स्वयं चैत पैरव फैलाये', 'दीठ ना मिलायो शीर्षक गीतों का मूल कथ्य भले ही प्राचीन है लेकिन कवयित्री ने शब्द बदलकर दुहरे अर्थ चित्रित किए हैं ।

सन्दर्भ सूचि

- धर्मवीर भारती : सात वर्ष गीत, पृ॰ 25
- वही
- ओ रे साथी, पृ॰ 15

© RRIJM 2015, All Rights Reserved